by -
Dr. Shailesh Kumar
dept. of economics
Raja Singh College, Siwan
mob. 9934788061

एकक्रेताधिकार तथा द्विपक्षीय एकाधिकार :—
(monopsony & bilateral monopoly)

एक क्रेताधिकार :—

एक क्रेताधिकार बाजार उस स्थिति को निर्दिष्ट करता है जिसमें किसी वस्तु या सेवा का कोई एक ही क्रेता हो। यह उस स्थिति पर लागू होता है, जहाँ वस्तु खरीदने में एकाधिकार का तत्व हो। उदाहरण के लिए, जहाँ किसी वस्तु के उपभोक्ता संगठित होते हैं अथवा जहाँ कोई समाजवादी सरकार आयातों को नियमित करती है, अथवा जहाँ कोई व्यक्ति संयोगवश किसी ऐसी वस्तु में रुचि रखता है जिसकी किसी और को जरूरत नहीं। अथवा जहाँ किसी अलग-अलग इलाके में कोई अकेली बड़ी फैक्ट्री श्रेणीकृत श्रम की एकमात्र खरीदार हो, वहाँ एक क्रेताधिकार होता है। "प्रोफेसर लाईबाफ्स्की (Liebhafsky) के शब्दों में एक क्रेताधिकार की औपचारिक परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि "एक क्रेताधिकार उस एकमात्र क्रेता की स्थिति है जो उस उत्पाद के लिए अन्य क्रेताओं से प्रतियोगिता नहीं रखता जिसे वह खरीदना चाहता है, और कि यह ऐसी स्थिति है जिसमें अन्य क्रेताओं का बाजार में प्रवेश असंभव है।"

द्विपक्षीय अधिकार :—

एक पक्षीय अधिकार एक ऐसी मार्केट स्थिति है जिसमें एक अकेला उत्पादक उस वस्तु के अकेले खरीदार

P.T.O.

Scanned by CamScanner

(एक क्रेताधिकारी) का सामना करना है। इसके कुछ मान्यताएँ हैं:-

(i) एक ही वस्तु है जिसके निकट स्थानापन्न है :

(ii) एकाधिकारी इसका अकेला उत्पादक या विक्रेता है।

(iii) एक क्रेताधिकारी इसका अकेला खरीददार है।

(iv) एकाधिकारी और एक क्रेताधिकारी दोनों अपने-अपने निजी लाभों को अधिकतम करने की स्वतंत्रता है।